अध्याय - 7

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

हम पढ़ेंगे

7.1 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि
7.2 स्वतंत्रता संग्राम के कारण
7.3 स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ
7.4 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की असफलता के कारण
7.5 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का महत्व एवं स्वरूप
7.6 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारत के इतिहास की एक गरिमामय युगान्तकारी घटना है। 1857 की क्रांति भारत की पहली सशस्त्र क्रांति थी, जिसकी व्यापकता और शक्ति के सामने ब्रिटिश शासन की नींव डगमगा उठी थी। राष्ट्रीय समस्याओं को केन्द्र में रखकर 1857 की क्रांति ने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के अस्तित्व को चुनौती दी। संपूर्ण देश में 1857 की क्रांति संगठित रूप से अंग्रेजी शासन की समाप्ति के लिए प्रथम सशस्त्र संघर्ष था। यद्यपि संग्राम असफल हो गया परन्तु इसकी स्मृति और प्रेरणा जनमानस में विद्यमान रही। प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के पश्चात् भारतीयों में जो चेतना जागृत हुई, वह विशुद्ध रूप से भारतीय थी। भारतीयों ने यह अनुभव किया कि उनके और अंग्रेजी प्रशासन के हितों में भिन्नता है और अंग्रेज अपने स्वार्थों को पूर्ण करने के लिए भारतीयों का कभी भला नहीं होने देंगे। उन्हें यह भी आभास हुआ कि जब तक वे स्वयं नींद से नहीं जागेंगे और स्वतन्त्रता, समानता, बंधुत्व, आत्मसम्मान, अखण्डता और भारतीय होने के गर्व की भावना से कार्य नहीं करेंगे, देश गुलाम ही बना रहेगा। इस प्रकार के विचारों ने भारतीयों में राष्ट्रीय भावनाएँ बलवती कर दीं।

7.1 1857 के संग्राम की पृष्ठभूमि (भारत में यूरोपियों के आगमन से 1857 के संग्राम आरम्भ होने तक)

1857 में भारत की आम जनता, सैनिक और देशी रियासतों के राजाओं तथा जमींदारों ने विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए बहादुरी से संघर्ष किया इस कारण इसे 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम माना जाता है। 1857 की घटनाएँ, स्वतन्त्रता संग्राम की प्रथम चिंगारी थी। इस संग्राम में सैनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। समाज के प्रत्येक वर्ग ने खुलकर इस संघर्ष में भाग लेकर इसे मजबूत आधार प्रदान किया। इस संघर्ष में लाखों नागरिकों, सैनिकों आदि का बलिदान हुआ।

पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से भारत में अनेक यूरोपीय शक्तियों ने व्यापार करने के उद्देश्य से भारत में प्रवेश किया। जिन यूरोपीय देशों की व्यापारिक कम्पनियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपने व्यापारिक केन्द्र स्थापित किये, उनमें पुर्तगाल, हालैंड, इंग्लैण्ड तथा फ्रांस प्रमुख थे। यह व्यापारिक केन्द्र मुख्यत: समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों में स्थित थे। इन व्यापारिक केन्द्रों को 'फैक्टरी' कहा जाता था। कम्पनियों ने प्रतिद्वंदियों के हमलों से रक्षा के लिए फैक्ट्रियों की किलेबन्दी की। यह व्यापारिक कम्पनियाँ भारत में उपलब्ध ऐसी वस्तुओं को, जिनका यूरोप में अभाव था सस्ती दरों पर खरीदती थीं और इनका निर्यात कर अधिक से अधिक लाभ कमाती थीं। इसी कारण इन कम्पनियों के मध्य पारस्परिक संघर्ष होते रहते थे।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1600 ई. में हुई थी। व्यापार द्वारा अधिक से अधिक लाभ कमाकर इंग्लैण्ड को समृद्ध बनाना कम्पनी का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कम्पनी ने उचित-अनुचित मार्ग का सहारा लेने में कोई संकोच नहीं किया। कम्पनी ने सर्वप्रथम सूरत को व्यापारिक केन्द्र के रूप में

विकसित किया। इसके पश्चात् कम्पनी ने भरूच, अहमदाबाद, आगरा, मछलीपट्टनम, मद्रास, मुम्बई, बंगाल में कलकत्ता आदि अनेक स्थानों पर अपने प्रमुख व्यापारिक केन्द्र बनायें।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी 17 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से भारत में राजनीतिक सत्ता स्थापित करने का स्वप्न देखने लगी थी क्योंकि इससे वह अपना व्यापार बेरोकटोक चला सकती थी। 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य तेजी से विघटित होने लगा। देश जल्दी ही छोटे-छोटे प्रदेशों में बंट गया। उनमें से कई प्रदेश लगभग स्वतन्त्र हो गये। इन परिस्थितियों में ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपना वर्चस्व बढ़ाने का मौका मिला। कम्पनी ने देशी राज्यों के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप कर प्रतिद्वंदी कम्पनियों और देशी राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास किया।

दक्षिण भारत में फ्रांसीसी कम्पनी का प्रभाव कर्नाटक और हैदराबाद में स्थापित हो गया था। इस प्रभाव को समाप्त करने के लिए अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से कर्नाटक में तीन युद्ध लड़े और अंततः विजयी हुये।

1757 के प्लासी के युद्ध में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को पराजित किया और 1764 के बक्सर के युद्ध में कम्पनी ने अवध - बंगाल और मुगल सम्राट की संयुक्त शक्ति को पराजित किया। अंग्रेजों की इन विजयों ने भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना का मार्ग खोल दिया। धीरे-धीरे कम्पनी ने उन सभी भारतीय शक्तियों की चुनौती को समाप्त करना आरम्भ किया जो कम्पनी के एकाधिकार के मार्ग में बाधा बन सकती थीं। बंगाल में वर्चस्व स्थापित करने के बाद कम्पनी ने मैसूर, मराठा, सिंध एवं पंजाब में सिक्खों की चुनौती को ध्वस्त किया। भारतीय राज्यों पर विजय प्राप्त करने के बाद कम्पनी ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए पड़ोसी देशों की ओर ध्यान दिया। शीघ्र ही कम्पनी ने नेपाल, बर्मा, अफगानिस्तान, तिब्बत, सिक्किम, भूटान के साथ संघर्ष कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भारत में साम्राज्य विस्तार के साथ-साथ भारत के परम्परागत सामाजिक और आर्थिक ढाँचे को नष्ट किया। अंग्रेजों ने भूमि पर लगान सम्बन्धी जो नीति अपनायी उससे भारतीय किसानों को सर्वाधिक हानि उठानी पड़ी। अंग्रेजों ने भारत के परम्परागत हस्तकरघा और हस्तकला उद्योग जैसे कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया। इसके कारण भारत का धन इंग्लैण्ड की ओर प्रवाहित हुआ। ब्रिटिश निर्यात नीति और उद्योगों की स्थापना का भी एक ही उद्देश्य था - वह यह कि भारत को आर्थिक रूप से बर्बाद कर ब्रिटेन को सम्पन्न बनाया जाए।

इसी प्रकार **ईस्ट इंडिया कम्पनी** ने विजय के माध्यम से, भारतीय प्रदेशों का अनुचित तरीकों से कम्पनी के साम्राज्य में विलय करके तथा भारतीय जनता का शोषण करके भारतीय जन मानस को असन्तोष एवं आक्रोश की भावना से भर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि 1765 से 1856 तक देश के विभिन्न भागों में दर्जनों विद्रोह हुए। इनमें से कई विद्रोह किसानों और आदिवासियों ने किए थे। पदच्युत शासकों, जमींदारों और सरदारों के नेतृत्व में भी कई विद्रोह हुए। कम्पनी की फौज के सिपाहियों ने भी विद्रोह का झंडा ऊँचा किया।

जमींदारों और अंग्रेजों द्वारा किसानों के शोषण के विरुद्ध **फरायज़ियों** ने, जो मुसलमानों के एक सम्प्रदाय के अनुयायी थे, विद्रोह किया था।

1849 ई. में अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार करने के पश्चात् अपनी शोषण की नीति को धीरे-धीरे लागू करना प्रारंभ कर दिया, जिससे पंजाब के लोगों में रोष व्याप्त होने लगा। गुरू रामसिंह ने 13 अप्रैल 1857 ई. से अपने शिष्यों को, जिन्हें नामधारी सिक्ख कहा जाता था। देश व धर्म की रक्षा के लिए प्रेरित करना आरम्भ किया। अंग्रेजो के विरूद्ध आवाज (कूक) उठाने के कारण इन लोगों को कूका कहा जाता है। अंग्रेजों ने पंजाब में अनेक स्थानों पर बूचडखाने स्थापित किए, जिनमें गो वध भी किया जाता था। कूकों ने ऐसे बूचडखानों पर आक्रमण करके उन्हें बन्द कर दिया। इसी प्रकार कूकों ने मालेर कोटला के बूचडखाने पर आक्रमण करके अधिकार कर लिया। पुलिस ने 49 कूकों को बंदी बनाकर तोपों से उड़ा दिया। कूकों ने तोपों की ओर अपना सीना करके वीरतापूर्वक मौत को गले लगाया।

कम्पनी की फौज के सिपाहियों ने जो विद्रोह किये, उनमें प्रमुख थे – 1806 ई. का **बैल्लोर विद्रोह** और 1824 ई. का **बैरकपुर विद्रोह**। बैल्लोर का विद्रोह टीपू के वंशजों की प्रेरणास्वरूप हुआ था, जिसे अंग्रेजी फौज ने निर्ममता पूर्वक कुचल डाला। 1824 में बैरकपुर में 47 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री के सिपाहियों द्वारा किये गये विद्रोह से अंग्रेजों के हौसले पस्त हो गये थे, लेकिन अंग्रेजों द्वारा विद्रोह को बड़ी क्रूरता से कुचल डाला गया।

भारत के विभिन्न भागों में बसने वाली जनजातियों ने भी ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अपने असंतोष की अभिव्यक्ति शस्त्र उठाकर की। इसका कारण यह था कि जनजातियाँ ब्रिटिश सरकार की प्रशासनिक, न्यायिक और भू-राजस्व व्यवस्था से असंतुष्ट थीं। ब्रिटिश सरकार ने जनजातियों की जीविका के साधन (जंगलों) को अपने संरक्षण में ले लिया था और जंगल से संलग्न कृषि भूमि से उन्हें बेदखल कर दिया था। इस समय अनेक नये भू-स्वामी, साहूकार और व्यापारी भी जनजातियों का आर्थिक शोषण कर रहे थे। जनजातियाँ इसलिए आक्रोश में थीं क्योंकि उनकी आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को कम्पनी सरकार की नयी व्यवस्था ने चौपट कर दिया था। जिन जनजातियों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह किये, उनमें प्रमुख थे – मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में भीलों का विद्रोह, उड़ीसा में गोंड़ों तथा खोंड़ों का विद्रोह, छोटे नागपुर में कोल विद्रोह, राजस्थान में मेड़ों का विद्रोह, बंगाल तथा बिहार में संथालों का विद्रोह, पूर्वोत्तर भारत में खासियों का विद्रोह आदि। इसके अलावा कुछ गैर जनजातीय आन्दोलन भी हुए जिनमें प्रमुख हैं – कट्टबोमन (तमिलनाडु), पैंका (उड़ीसा), वेलूथम्बी (त्रावणकोर), रामोसी (पुणे), बुन्देला (बुन्देलखण्ड), गडकरी (महाराष्ट्र), फमकोण्डा (आन्ध्रप्रदेश)।

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जितने विद्रोह हुये उनका स्वरूप स्थानीय रहा और उनका दमन हो गया। यद्यपि ये विद्रोह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध गम्भीर चुनौती उत्पन्न नहीं कर सके परन्तु इससे यह सिद्ध होता है कि 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के पूर्व ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के विरुद्ध व्यापक असन्तोष विद्यमान था। 1857 के संग्राम की पृष्ठभूमि निर्मित करने में इन विद्रोहों की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं।

7.2 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कारण

राजनीतिक कारण : अंग्रेजों की राज्य विस्तार की नीति के कारण भारत के अनेक शासकों और जमीदारों में असन्तोष व्याप्त हो गया था। लार्ड वेलजली की **सहायक संधि व्यवस्था** और लार्ड डलहौजी की **हड़प नीति** के कारण अनेक राज्यों का अंग्रेजी साम्राज्य में जबरदस्ती विलय कर दिया गया। अंग्रेजों ने पंजाब, सिक्किम, सतारा, जैतपुर, सम्भलपुर, झांसी, नागपुर आदि राज्यों को अपने अधीन कर लिया था। सरकार ने अवध, तंजौर, कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियाँ समाप्त कर राजनीतिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न कर दी। अंतिम मुगल साम्राट के प्रति अंग्रेजों का व्यवहार अनादरपूर्ण होता चला गया। इन परिस्थितियों में शासक-परिवारों में घबराहट फैल गयी थी। अंग्रेजों ने जिन राज्यों पर कब्जा किया वहाँ के सैनिक, कारीगर तथा अन्य व्यवसायों से जुड़े लोग भी प्रभावित हुए। अंग्रेजों ने अनेक सरदारों और जमींदारों से उनकी जमीन छीन ली। इसके कारण इन जमींदारियों में कार्यरत व्यक्ति बेरोजगार हो गये।

भारतीय भाषा, संस्कृति एवं परम्पराओं पर आघात : लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति भारतीय शिक्षा पद्धति एवं संस्कृति पर आक्रमण था। वह पूर्वाग्रहों से प्रेरित था और देशी भाषाओं में शिक्षा दिये जाने का विरोधी था। मैकाले, अंग्रेजों को सबसे उच्च नस्ल एवं अंग्रेजी भाषा को सर्वोत्तम मानता था और इसीलिए उसने अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित किया। परन्तु इस समय मैकाले का उद्देश्य अंग्रेजी शिक्षा का ज्ञान देकर ब्रिटिश राज्य के हितों की रक्षा करना था और ऐसे व्यक्ति तैयार करना था जो अंग्रेजों को शासन में मदद कर सकें। मैकाले प्रजातीय अहंकार से परिपूर्ण था इसका उदाहरण यह है कि उसकी अनुशंसा पर सरकार ने प्राच्य भाषाओं की पुस्तकों के मुद्रण और अनुवाद पर प्रतिबन्ध लगा दिया। प्राच्य भाषा के समर्थकों ने अंग्रेजी शिक्षा नीति को अपनी भाषा, परम्परा एवं संस्कृति पर आक्रमण मानकर इसका विरोध किया।

आर्थिक कारण : अंग्रेजों द्वारा लागू की गयी भूमि व्यवस्थाओं ने किसानों को नष्ट कर दिया था। अत्यधिक करों के भार के तले दबे हुए भारतीय कृषकों की हालत निरन्तर गिरती जा रही थी। परिणाम यह हुआ कि कृषक साहूकारों के चंगुल में फंसकर कर्जदार हो गये।

सरकार ने इंग्लैण्ड में तैयार माल की खपत भारत में बढ़ाने के लिए भारत के करघा और हस्तशिल्प कुटीर उद्योगों को बरबाद कर दिया।

सामाजिक और धार्मिक कारण : कम्पनी शासन की सामाजिक एवं धार्मिक नीति के कारण भारतीय जनमानस में असन्तोष व्याप्त हुआ। जनता में यह भय उत्पन्न हुआ कि ब्रिटिश शासन उनके धर्म तथा रीतिरिवाजों को नष्ट करने पर तुला हुआ है।

मेजर एडवर्डन ने कहा था, ''भारत पर हमारे अधिकार का अंतिम उद्देश्य देश को ईसाई बनाना है।''

कम्पनी सरकार ने सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए अनेक कदम उठाये तथा कानूनों को लागू किया। भारतीयों ने इसे अपने सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप माना। ब्रिटिश सरकार द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार, धर्म परिवर्तन हेतु प्रलोभन देना, शिक्षण संस्थाओं में ईसाई धर्म की शिक्षा दिया जाना, ऐसे अनेक कारण थे जिनके कारण भारतीयों में अत्यधिक असंतोष था।

सैनिकों में असंतोष : कम्पनी सरकार की नीतियों के कारण सैनिकों में असन्तोष व्याप्त था। ब्रिटिश सरकार का अस्तित्व भारतीय सैनिकों पर ही टिका हुआ था परन्तु इसके बावजूद सैनिकों के साथ भेदभाव का व्यवहार किया जाता था। भारतीय सिपाहियों के लिए पदोन्नति के रास्ते बंद थे। यूरोपीय सैनिकों की तुलना में उन्हें वेतन भी कम मिलता था। यूरोपीय अधिकारी भारतीय सिपाहियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। धार्मिक मान्यताओं के कारण सिपाही समुद्र पार नहीं जाना चाहते थे परन्तु उन्हें जबरदस्ती युद्ध के लिए समुद्र पार भेजा जाता था। इसके अतिरिक्त भारतीय सिपाही भारतीय समाज के अभिन्न अंग थे। स्वाभाविक रूप से शासकों, जमींदारों, किसानों, दस्तकारों आदि को जो कष्ट भुगतने पड़ रहे थे, उन कष्टों ने सिपाहियों को प्रभावित किया।

अंग्रेजों ने भारतीय सैनिकों को तिलक लगाने, चोटी रखने, टोपी पहनने और दाढ़ी-मूँछ रखने पर रोक लगा दी थी जिससे उनकी धार्मिक व सांस्कृतिक भावनाओं को ठेस पहुँची। इस प्रकार जनता के विभिन्न समुदायों में विदेशी शासन के प्रति असन्तोष बढ़ता जा रहा था। इसी समय सिपाहियों को एक नये किस्म की रायफल दी गयी। जिनके कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी लगायी जाती थी। राइफल में कारतूस भरने के पहले उसके किनारों को दाँतों से काटना पड़ता था। भारतीय सैनिक धार्मिक भावनाओं के कारण इस कारतूस का उपयोग नहीं करना चाहते थे। यही बात विद्रोह का तात्कालिक कारण बनी।

तात्कालिक कारण : बैरकपुर छावनी में 29 मार्च 1857 को मंगल पाण्डेय नामक सैनिक ने चर्बी वाले कारतूस को भरने से इन्कार कर दिया और उत्तेजित होकर अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। फलस्वरूप उसे बन्दी बनाकर 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गयी। मंगल पाण्डेय का बलिदान इस विद्रोह में पहली आहुति थी।

7.3 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ

बैरकपुर के बाद ऐसी ही घटना मेरठ में हुयी। मेरठ में भारतीय घुड़सवारों की सेना के पचासी सैनिकों ने चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग से मना कर दिया। अत: उन्हें 9 मई 1857 को सेना से बर्खास्त कर जेल में बंद कर दिया गया। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप 10 मई 1857 को मेरठ में सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया। उन्होंने बन्दीगृह तोड़कर कैदियों को रिहा किया और उसी रात्रि को दिल्ली की ओर कूच कर दिल्ली व वहाँ के शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया। सैनिकों ने मुगल बादशाह बहादुरशाह द्वितीय को भारत का सम्राट घोषित किया। बादशाह

ने भारत के सभी राजाओं और रजवाड़ों को सहायता के लिए पत्र लिखे। इस प्रकार यह संग्राम आरम्भ हुआ।

क्रान्ति की प्रथम चिंगारी बैरकपुर (बंगाल) में प्रज्जवलित हुई परन्तु क्रान्ति का प्रारम्भ 10 मई से माना जाता है क्योंकि क्रान्तिकारियों ने इसी घटना के बाद सुनियोजित रूप से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने का कार्य आरम्भ किया।

दिल्ली की क्रांति का समाचार शीघ्र ही आग की भाँति चारों ओर फैल गया। अवध, कानपुर, रुहेलखण्ड, अलीगढ़, मथुरा, आगरा, बदायूँ, बिहार के अधिकांश भागों, राजस्थान की नसीराबाद सैनिक छावनी, कोटा, जोधपुर आदि नगरों तथा मध्यप्रदेश के इन्दौर, नीमच और ग्वालियर की सैनिक छावनियों में सैनिकों ने क्रान्ति आरम्भ कर दी। जनता ने स्थान-स्थान पर सैनिकों का स्वागत किया। कृषक, कारीगर और सामान्य व्यक्ति भी क्रान्ति के समर्थक और सहायक बना। किसानों और दस्तकारों ने जो अत्याचार और शोषण का शिकार थे, संग्राम में खुलकर भाग लिया। किसानों और जमीदारों ने साहूकारों एवं नए भू-स्वामियों पर आक्रमण कर उनसे बहीखाते और ऋण प्रमाण-पत्र छीन लिए। जनसाधारण ने ब्रिटिश न्यायालयों, राजस्व कार्यालयों और थानों पर आक्रमण किया। जनसाधारण के भाग लेने के कारण ही यह संग्राम राष्ट्रीय महत्व की घटना बनी।

बिहार में क्रान्तिकारी सेनाओं का नेतृत्व कुंवरसिंह ने किया। दिल्ली में क्रान्ति का नेतृत्व मुगल बादशाह के सेनापति बख्त खाँ ने किया। कानपुर में क्रान्तिकारियों ने नाना साहब को पेशवा घोषित किया और अजीमुल्ला उसका मुख्य सलाहकार बना। नाना साहब के सैनिकों का नेतृत्व तात्या टोपे ने किया। झांसी में दिवंगत राजा की विधवा रानी लक्ष्मीबाई ने सैनिकों का नेतृत्व किया।

लुधियाना की सिक्ख रेजीमेन्ट के सैनिक पूर्वी उत्तरप्रदेश के क्रान्तिकारियों से जा मिले। लखनऊ में अंग्रेजों का सामना बेगम हजरत महल ने किया। उसने अपने अल्पायु पुत्र बिरजिस कादर को अवध का नवाब घोषित कर शासन आरम्भ किया। मौलवी अहमदुल्ला के नेतृत्व में सैनिकों ने लखनऊ की रेसीडेंसी को घेर लिया। बरेली में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति का नेतृत्व खानबहादुर खाँ ने किया।

सम्पूर्ण क्रान्ति के दौरान हिन्दू और मुसलमान कंधे से कंधा मिलाकर लड़े। अंग्रेजों ने हिन्दुओं और मुसलमानों को एक-दूसरे के विरुद्ध उकसाने के अनेक प्रयास किए, परन्तु ऐसे सारे प्रयास व्यर्थ सिद्ध हुए।

संग्राम का स्वरुप इतना व्यापक होने के उपरांत भी एक साल से कुछ अधिक समय बाद ही इसे कुचल दिया गया। सितम्बर 1857 में अंग्रेजों ने दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया। 1858 में लखनऊ पर ब्रिटिश सैनिकों का कब्जा हो गया, किन्तु बेगम हज़रत महल ने समर्पण करने से मना कर दिया। वह नेपाल चली गईं। रानी लक्ष्मीबाई ने तात्याटोपे की मदद से ग्वालियर पर अधिकार कर लिया परन्तु अन्ततः 18 जून 1858 में लड़ते हुए वह वीरगति को प्राप्त हुई। अप्रैल 1858 में गंभीर रूप से घायल होने के बाद कुंवर सिंह की मृत्यु हो गयी। तात्या टोपे राजस्थान और मध्यप्रदेश में अंग्रेजों से गुरिल्ला युद्ध पद्धति से संघर्ष करते रहे। अंततः गुना के निकट आरोन के जंगल में तात्या टोपे को धोखे से बन्दी बनाने में अंग्रेज सफल हुए। बाद में उन्हें शिवपुरी में फांसी दे दी गयी।

सामान्यतः यह धारणा बनायी गयी है कि 1857 का संग्राम केवल उत्तर भारत तक सीमित रहा। वस्तुतः यह संग्राम सम्पूर्ण वर्तमान महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु और केरल में भी व्याप्त था। यहाँ तक कि गोवा और पांडिचेरी भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। महाराष्ट्र में सतारा, कोल्हापुर, पूना, बम्बई के क्षेत्र प्रभावित हुए। कडप्पा और विशाखापट्टनम से नैलोर तक की समुद्र पट्टी संग्राम से प्रभावित हुयी। कर्नाटक में मैसूर, धारवाड़, बीजापुर, बेलगांव आदि क्षेत्रों में ब्रिटिश सत्ता का खुलकर प्रतिकार हुआ। तमिलनाडु में मद्रास (चिन्नई), चिंगलपुर, उत्तरी अटकार, सेलम, तंजौर, मदुरई, कोयंबटूर और तिरुनेलवली में ब्रिटिश शासन को चुनौती दी गयी।

1857 का संग्राम अंग्रेजों द्वारा कुचल दिया गया परन्तु अंग्रेजों को सैनिकों के साथ-साथ नागरिकों के विरोध का भी सामना करना पड़ा था अत: अंग्रेजी फौजों ने संग्राम के दमन के लिए गाँव के गाँव जला दिये तथा लोगों को भयभीत करने के लिए सार्वजनिक स्थलों पर बंदियों को फांसी देने की व्यवस्था की। इतिहासकारों का मत है कि इस संग्राम में लगभग तीन लाख नागरिक मारे गए।

7.4 प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की असफलता के कारण

1857 की गौरवपूर्ण क्रांति के परिणाम चाहे तात्कालिक रूप से सकारात्मक न रहे हों किन्तु इसके दूरगामी परिणाम सामने आये। यह स्वतन्त्रता संग्राम निम्नलिखित कारणों से सफल नहीं हो सका -

1. **संगठन और एकता का अभाव** - 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के असफल रहने के पीछे संगठन और एकता का अभाव प्रमुख रूप से उत्तरदायी रहा। इस क्रान्ति की न तो कोई सुनियोजित योजना ही तैयार की गई न ही कोई ठोस कार्यक्रम था। इसी कारण यह सीमित और असंगठित बन कर रह गया।

2. **नेतृत्व का अभाव** - 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम आंदोलन की सशक्त रणनीति बनाने में योग्य नेतृत्व का अभाव असफलता का एक बड़ा कारण था। इस आंदोलन का किसी एक व्यक्ति ने नेतृत्व नहीं किया जिस कारण से यह आंदोलन अपने उद्देश्य में पूर्णत: सफल नहीं हो सका।

3. **परम्परावादी हथियार** - प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीय सैनिकों के पास आधुनिक हथियार नहीं थे जबकि अंग्रेज सैनिक पूर्णत: आधुनिक हथियार व गोला-बारूद का उपयोग कर रहे थे। भारतीय सैनिक अपने परम्परावादी हथियार- तलवार, तीर-कमान, भाले-बरछे आदि के सहारे ही युद्ध के मैदान में कूद पड़े थे जो उनकी पराजय का कारण बना।

4. **सामन्तवादी स्वरूप** - 1857 के संग्राम में एक ओर अवध, रूहेलखण्ड आदि उत्तरी भारत के सामन्तों ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह किया तो दूसरी ओर पटियाला, जींद, ग्वालियर व हैदराबाद के शासकों ने विद्रोह के उन्मूलन में अंग्रेजी हुकूमत को सहयोग किया। इस तरह यह स्वतन्त्रता संग्राम अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका।

5. **बहादुरशाह द्वितीय की अनभिज्ञता**- क्रान्तिकारियों द्वारा बहादुरशाह द्वितीय को अपना नेता घोषित करने के बावजूद भी बहादुरशाह के लिए यह क्रान्ति उतनी ही आकस्मिक थी जितनी कि अंग्रेजों के लिए थी। यही कारण था कि अंतत: बहादुरशाह को लेफ्टीनेण्ट हडसन ने बंदी बना कर रंगून भेज दिया।

6. **समय से पूर्व और सूचना प्रसार में असफल क्रान्ति** - 1857 की क्रान्ति का एक बड़ा कारण यह भी था कि यह क्रान्ति समय से पूर्व ही प्रारम्भ हो गयी। यदि यह क्रान्ति एक निर्धारित कार्यक्रम के तहत लड़ी जाती तो इसकी सफलता के अवसर ज्यादा होते। इसी तरह आंदोलन के प्रसार-प्रचार में भी क्रांतिकारी नेतृत्व असफल रहा। इसका असर 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम पर गहराई से पड़ा।

7. **स्थानीयता** - 1857 की क्रान्ति में स्थानीय उद्देश्य होने से आम भारतीयों का व्यापक जुड़ाव इसमें नहीं हो सका। इस समय केवल उन्हीं शासकों ने क्रान्ति में हिस्सा लिया जिनके हित सामने आ रहे थे। 1857 की असफलता का यह भी एक कारण था।

8. **सम्पर्क भाषा का अभाव** - 1857 की क्रान्ति की असफलता का एक महत्वपूर्ण कारण क्रान्तिकारियों में सम्पर्क भाषा का अभाव भी था। तत्कालीन समय में अंग्रेजों की एक भाषा थी जिसका उद्देश्य वे सूचना-संदेश पहुँचाने में करते थे किन्तु एक राष्ट्र भाषा के अभाव में भारतीय क्रान्तिकारियों के बीच आपसी सूचनाएँ समय पर पहुंचने के बाद भी संदेशों से वे परिचित नहीं हो पाते थे। 1857 की असफलता का यह महत्वपूर्ण कारण था।

7.5 प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का महत्व एवं स्वरूप

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में यद्यपि पराजय का सामना करना पड़ा किन्तु इस क्रान्ति के बड़े गहरे व दूरगामी परिणाम सामने आये जो भारतीय स्वतन्त्रता आंदोलन के इतिहास में भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बने। क्रान्ति ने अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हिला दिया था।

1857 ई. का संग्राम ब्रिटिश राज के लिए एक बड़ी चुनौती था। इसे अन्ततः तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग के द्वारा कुचल दिया गया, परन्तु इस संग्राम से अंग्रेजों को गहरा झटका लगा। इस संग्राम ने अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हिला कर रख दिया था अतः ब्रिटिश सरकार ने भारत में अनेक प्रशासनिक परिवर्तन किये। इन परिवर्तनों के कारण भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था और सरकार में जो हुए, वे निम्नलिखित थे–

- ब्रिटिश संसद ने 1858 ई. में एक अधिनियम पारित किया। इसके अनुसार भारत पर शासन करने का अधिकार ईस्ट इंडिया कंपनी से लेकर सीधे इंग्लैण्ड की सरकार ने अपने हाथ में ले लिया।
- 1858 के पश्चात् सेना का पुनर्गठन किया गया। अंग्रेजों का भारतीय सैनिकों पर से विश्वास उठ गया था अतः महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ अंग्रेज अधिकारियों को सौंपी गयीं। इसके अतिरिक्त यूरोपीय सैनिकों की संख्या में वृद्धि की गयी। अंग्रेजों ने 'फूट डालो शासन करो' की नीति का पालन करते हुए भारतीय सेनाओं का संगठन किया।
- ब्रिटिश शासन ने देशी रियासतों का विलय करने की नीति में परिवर्तन किया और उत्तराधिकारियों को गोद लेने के अधिकार को मान्यता प्रदान की। देशी रियासतों के शासकों को यह भी आश्वासन दिया गया कि अब किसी रियासत का विलय नहीं किया जायेगा।
- ब्रिटिश सरकार ने राजाओं, भू-स्वामियों और जमींदारों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया और इस प्रकार उनका समर्थन प्राप्त करने की नीति अपनायी।
- 1857 के संग्राम को ब्रिटिश इतिहासकारों ने 'सैनिक विद्रोह' की संज्ञा देकर उसके महत्व को कम आँका। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी और विचारक विनायक दामोदर सावरकर ने 1857 भी घटनाओं को 'भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम' कहा तथा अपनी पुस्तक का शीर्षक भी यही दिया है।

संग्राम का आरम्भ 10 मई 1857 को मेरठ में सैनिको द्वारा किया गया था परन्तु यह ध्यान रखा जाना आवश्यक है कि सैनिकों ने अगले ही दिन दिल्ली की ओर कूच कर और वहाँ पहुँचकर बहादुरशाह द्वितीय को प्रतीक के रूप में भारत का सम्राट घोषित कर दिया था। इस प्रकार स्वतन्त्रता का युद्ध सैनिक और अधिकारियों के मध्य न रहकर दो राजनीतिक सत्ताओं के बीच आरम्भ हो गया था।

संग्राम में बड़ी मात्रा में जनसाधारण सम्मिलित हुआ था। एक ओर सैनिक ब्रिटिश सत्ता से विद्रोह कर रहे थे तो दूसरी ओर जनसाधारण भाले, कुल्हाडियाँ, लाठियाँ आदि लेकर अपना विरोध प्रकट करने के लिए मैदान में कूद पड़े थे। अनेक स्थानों पर ग्रामीण लोगों के मन से राज्य और प्रशासन का भय समाप्त हो गया था। जिन स्थानों पर सैनिक नहीं पहुँच सके, वहाँ जनसाधारण ने स्वयं संगठित होकर संग्राम आरम्भ कर दिया था। किसानों, दस्तकारों, धार्मिक लोगों और उन जमींदारों ने जिनसे भूमि छीन ली गयी थी, संग्राम में खुलकर अपना आक्रोश व्यक्त किया। भारतीय समाज पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाली हर नीति से सैनिक वर्ग प्रभावित होता था। इस प्रकार सैनिकों और जनसाधारण के हितों में समानता के कारण अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। इसमें जाति और धर्म की सभी बाधाएँ समाप्त हो गयी थीं हिन्दु और मुसलमान पहले से भी अधिक अटूट बन्धन में बंध गये। इस संग्राम ने भारत की भावी पीढ़ी को संघर्ष के लिए सदैव प्रेरित किया। 1857 के संग्राम ने स्वतन्त्रता की भावनाओं का बीजारोपण किया। इससे देश की सांस्कृतिक एकता को बल मिला।

इस संग्राम की प्रमुख विशेषता यह है कि इसने भारतीयों को एकता, संगठन और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एकजुटता के महत्व से परिचित कराया।

इस प्रकार लक्ष्य की एकता, साम्प्रदायिक सद्‌भाव एवं जन सहयोग की भावना के कारण 1857 ई. की घटनाएँ राष्ट्रीय स्वरूप की मानी जाती हैं।

7.6 स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी

1857 ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का विस्तार सम्पूर्ण भारत में हुआ। इस संग्राम के नायकों के वीरतापूर्ण कार्य कहानियाँ बनकर जनता में फैल गये। आने वाली पीढ़ियों के लिए ये नायक सदैव प्रेरणा के स्रोत बने रहे। सभी स्वतन्त्रता सेनानियों का उल्लेख किया जाना सम्भव नहीं है अत: प्रमुख सेनानियों का संक्षिप्त परिचय ही प्रस्तुत किया जा रहा है –

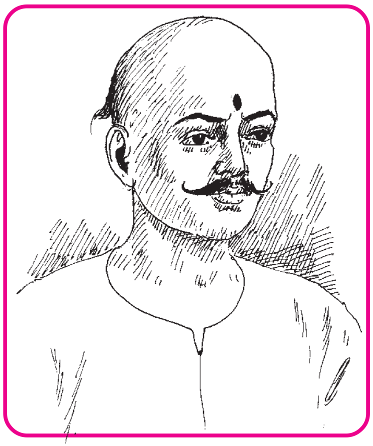

मंगल पांडे

मंगल पांडे – मंगल पांडे एक सैनिक था, जो बैरकपुर (बंगाल) स्थित छावनी में पदस्थ था। 29 मार्च 1857 को इस सैनिक ने चर्बी लगे कारतूसों को मुँह से काटने से स्पष्ट मना कर दिया व क्रोध में आकर अपने अधिकारियों की हत्या कर दी। फलस्वरूप उसे बन्दी बना लिया गया और 8 अप्रैल 1857 को फांसी दे दी गयी।

बहादुरशाह ज़फर

बहादुरशाह ज़फर (द्वितीय) – बहादुरशाह द्वितीय मुगल साम्राज्य के अंतिम बादशाह थे। 10 मई 1857 ई. को मेरठ की सैन्य छावनी के सिपाहियों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संग्राम आरम्भ कर दिल्ली जीत कर सत्ता के नए प्रतीक के रूप में वृद्ध बहादुरशाह द्वितीय को भारत का सम्राट घोषित कर दिया। वृद्धावस्था के बावजूद बहादुरशाह द्वितीय ने क्रान्ति का नेतृत्व इसलिए स्वीकार किया क्योंकि क्रान्तिकारियों में व्याप्त देश भक्ति की भावना ने उनमें भी आशा का संचार किया था। उन्होंने क्रान्ति को व्यापक रूप देने के लिए पटियाला, ग्वालियर, कश्मीर आदि रियासत के शासकों और राजपूताना के राजाओं को व्यक्तिगत पत्र लिखकर संग्राम में भाग लेने को कहा। दिल्ली के समाचारों के कारण क्रान्ति का विस्तार अनेक स्थानों पर हुआ। इससे घबराकर लार्ड कैनिंग ने दिल्ली से ही क्रांति दमन का निश्चय किया। बहादुरशाह द्वितीय की सेनाएँ अंग्रेजी फौजों से वीरतापूर्वक लड़ी परन्तु पराजित हुयीं। अंग्रेजों ने बहादुरशाह को बन्दी बना लिया। उन्हें निर्वासित कर रंगून (बर्मा) भेज दिया गया। जहाँ 1862 ई. में बहादुरशाह द्वितीय का निधन हो गया।

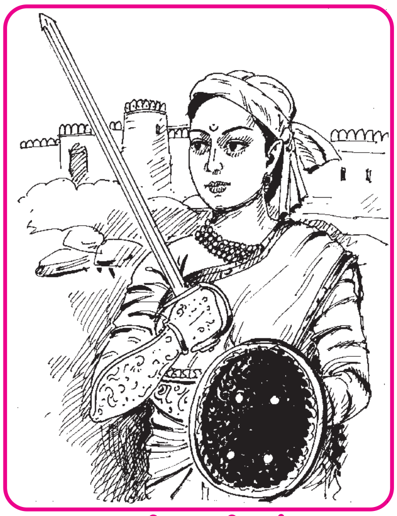

रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई – अंग्रेजों ने 1854 में झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात् उनकी रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र को झाँसी की गद्दी का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया तथा झाँसी को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लिया। इसका विरोध करते हुए रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश सेना से भयंकर टक्कर ली। सर ह्यूरोज द्वारा पराजित होने पर वह कालपी आयी व तात्या टोपे की मदद से ग्वालियर पर अधिकार किया। अंग्रेज सेनापति ह्यूरोज

ने ग्वालियर आकर किले को घेर लिया। 18 जून 1858 को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बड़ी वीरता से सैनिक वेश में संघर्ष करती हुयी वीरगति को प्राप्त हुयी। उनकी वीरता की गाथाएँ आज भी देशवासियों को प्रेरित करती हैं।

तात्या टोपे

तात्या टोपे – तात्याटोपे, 1857 के उन वीर सेनानियों में से एक थे, जिसकी आरम्भिक निष्ठा पेशवा परिवार के प्रति थी। तात्या टोपे अपनी देशभक्ति, वीरता, व्यूह रचना, शत्रु को चकमा देने की कुशलता, साधन हीनता की स्थिति में युद्ध जारी रखने का साहस, निर्भीकता और गुरिल्ला पद्धति से युद्ध के लिए जाने जाते हैं। पेशवा नाना साहेब की ओर से युद्ध का समस्त उत्तरदायित्व उनके स्वामिभक्त तात्या टोपे पर ही था।

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ ग्वालियर पर अधिकार करने में तात्या टोपे का बड़ा योगदान रहा। रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु के पश्चात् तात्या ने निरन्तर गुरिल्ला युद्ध के माध्यम से मध्यभारत और बुन्देलखण्ड में अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी। अंग्रेजों ने तात्या टोपे को बन्दी बनाने के लिए कुटिलता और विश्वासघात की नीति का सहारा लिया। अंततः तात्या टोपे को आरौन (जिला गुना) के जंगल में विश्राम करते समय बन्दी बनाया गया। अंग्रेजों ने 18 अप्रैल 1859 को तात्या टोपे को शिवपुरी में फांसी दी।

नाना साहेब

नाना साहेब – नाना साहेब, संग्राम के अन्य महत्वपूर्ण नेता थे। नाना साहेब भूतपूर्व पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे और बिठूर में निवास करते थे। पेशावा की मृत्यु के उपरान्त लार्ड डलहौजी ने नाना साहेब को पेंशन एवं उपाधि देने से वंचित कर दिया था। अतः नाना ने अपने स्वामिभक्त सैनिकों की मदद से अंग्रेजों को कानपुर से निकाल दिया और स्वयं को पेशवा घोषित कर दिया। तात्या टोपे और अजीमुल्लाह नाना साहेब के स्वामिभक्त सेनानायक थे।

बेगम हज़रत महल – बेगम हज़रत महल अवध के नवाब की विधवा थी। संग्राम आरम्भ होने पर 4 जून 1857 को अवध की बेगम ने संग्राम को प्रोत्साहन दिया और उसका संचालन किया। उसने अपने युवा पुत्र बिरजिस कादर को अवध का नवाब घोषित कर दिया तथा लखनऊ स्थित ब्रिटिश रेसीडेन्सी पर आक्रमण किया। बेगम हजरत महल ने शाहजहाँपुर में भी संग्राम का नेतृत्व किया। पराजित होने के पश्चात् बेगम सुरक्षा की दृष्टि से नेपाल चली गयीं।

बेगम हज़रत महल

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले अन्य प्रमुख नेता थे – कुंवर सिंह (जगदीशपुर-बिहार), अहमदुल्ला (फैजाबाद-रुहेलखण्ड), रंगा बापूजी गुप्ते (सतारा), सोनाजी पंडित (हैदराबाद), भीमराव मुंडर्गी (कर्नाटक), नाना फडनवीस (कोल्हापुर), गुलाम गौस (मद्रास) आदि।*

---

* पुस्तक में वर्णित स्वतंत्रता सेनानियों के साथ ही देश के विभिन्न भागों से कई सेनानियों ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया, पर सभी के संबंध में उल्लेख कर पाना संभव नहीं है। प्रदेश में स्थापित स्वराज भवन, भोपाल में इस विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध है। डेढ़ सदी पूर्व हुए, देश की स्वतंत्रता के लिए हुए संघर्ष में देश के वीरों के बलिदान के प्रति विद्यार्थियों में जागृति लाना अध्याय का उद्देश्य है।

शब्दावली

फैक्ट्री – भारत में यूरोपीय कम्पनियों के व्यापारिक केन्द्रों को फैक्ट्री कहा जाता था।

ईस्ट इंडिया कम्पनी – इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ प्रथम ने 1600 में पूर्व से व्यापार करने के लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी को व्यापार का एकाधिकार प्रदान किया।

सहायक सन्धि व्यवस्था – भारत के गवर्नर जनरल वेलेजली द्वारा लागू व्यवस्था को सहायक सन्धि व्यवस्था कहा जाता है। इस व्यवस्था को जो भारतीय नरेश स्वीकार करते थे, उन्हें अंग्रेजों के संरक्षण में रहकर कार्य करना पड़ता था।

हड़प नीति – इसे विलय नीति भी कहा जाता है। डलहौजी ने कम्पनी के अधीन देशी राज्यों के सन्तानहीन शासकों को गोद लेने के अधिकार से वंचित कर उनके राज्य को हड़प लिया।

रूढिवादी – परम्परागत नीति पर चलने वाले तथा किसी भी सुधार या प्रगतिशील कार्यक्रम को संदेह से देखने वाले।

रेजीडेंसी – अंग्रेजों का कार्यालय, जहाँ अंग्रेज अधिकारी रहते थे।

ब्रिटिश ताज – इंग्लैण्ड एवं उसके अधीनस्थ उपनिवेशों का सम्प्रभु सम्राट या साम्राज्ञी।

अभ्यास

सही विकल्प चुनिए -

1. 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में बुन्देलखण्ड से प्रमुख सेनानी थे –
   (i) कुंवर सिंह (ii) बख्तावर सिंह
   (iii) तात्या टोपे (iv) अहमदुल्ला खाँ
2. 1857 के संग्राम के समय भारत के गवर्नर जनरल थे –
   (i) डलहौजी (ii) बैटिंग
   (iii) कैनिंग (iv) रिपन

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. बहादुर शाह द्वितीय को बन्दी बनाकर .... स्थान पर भेज दिया गया।
2. लार्ड डलहौजी ने .... नीति के कारण अनेक राज्यों को अंग्रेजी राज्य में शामिल कर लिया।
3. ब्रिटिश संसद के 1858 के अधिनियम के अनुसार भारत पर शासन करने का अधिकार .... को दिया।
4. दिल्ली की जनता ने .... को भारत का सम्राट घोषित किया।
5. अंग्रेज इतिहासकारों ने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम को .... कहना स्वीकार किया।

सही जोड़ी मिलान कीजिए -

1.	बेगम हजरत महल	-	दिल्ली
2.	मंगल पांडे	-	बिठुर
3.	तात्या टोपे	-	अवध
4.	नाना साहब	-	बैरकपुर (बंगाल)
5.	बहादुरशाह जफ़र	-	शिवपुरी

अति लघुउत्तरीय प्रश्न -

1. उन क्षेत्रों के नाम लिखिए जहाँ 1857 ई. का स्वतन्त्रता संग्राम व्यापक रूप से हुआ।
2. 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं के नाम बताइए।
3. 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम का तात्कालिक कारण क्या था?
4. ब्रिटिश सरकार द्वारा उठाए गए समाज सुधार के कार्यो से भारतीय क्यों असन्तुष्ट हुए?

लघुउत्तरीय प्रश्न -

1. 1857 के संग्राम को प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम क्यों कहा जाता है?
2. 1857 के पूर्व ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह अपनी आरम्भिक अवस्था में क्यों असफल रहे?
3. भारतीय शासकों में असन्तोष के क्या कारण थे?
4. प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का राजनैतिक व्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा?
5. 1857 के संग्राम के असफलता के कारण बताइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है? लिखिए।
2. टिप्पणी लिखिए -
   (क) तात्या टोपे
   (ख) रानी लक्ष्मीबाई
   (ग) नाना साहेब
   (घ) हजरत महल

परियोजना कार्य -

- भारत के मानचित्र पर 1857 के संग्राम से सम्बन्धित क्षेत्रों को दर्शाते हुए उस क्षेत्र के नेताओं के नाम भी लिखिए।
- 1857 के संग्राम की योजना पर विचार कीजिए कि उसमें क्या कमी थी? उन विचारों को कक्षा में प्रस्तुत करिए।